

उत्तराखण्ड की नीतघाटी में बढ़ रहा ग्लेशियर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक उल्लेखनीय खोज में वैज्ञानिकों ने उत्तराखण्ड की नीतघाटी में तेजी से वसित हो रहे ग्लेशियर की पहचान की है।

- "बहु-कालिक उपग्रह डेटा का उपयोग करते हुए मध्य हिमालय में ग्लेशियर वृद्धि की अभिव्यक्तियाँ" शीर्षक वाले अध्ययन में ग्लेशियर के तीव्र विकास को देखने के लिये उपग्रह चित्रों का उपयोग किया गया।

मुख्य बढि

- यह नया ग्लेशियर, जो लगभग 10 किलोमीटर लंबा और लगभग 48 वर्ग किलोमीटर में वसित है, भारत-तिब्बत सीमा के समीप, राज्य के सुदूर उत्तरी क्षेत्र में रैंडोल्फ और रेकाना ग्लेशियरों के निकट स्थित है।
- ग्लेशियर में वर्तमान में "उछाल" का अनुभव हो रहा है, अर्थात् ग्लेशियर के आकार में अचानक और तीव्र वृद्धि, जो जल विज्ञान संबंधी असंतुलन के कारण हो सकती है।
 - ये असंतुलन तब होता है जब पानी बर्फ की परतों में घुस जाता है, जिससे वे कमजोर हो जाती हैं और बर्फ नीचे की ओर खसिकने लगती है।
- इस तेजी से बढ़ते ग्लेशियर की खोज से क्षेत्र के पर्यावरण और जलवायु पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।
 - हिमनदीय उछाल से हिमनदीय झील वसिफोट बाढ़ (GLOF) का संकट बढ़ सकता है, जो नचिले इलाकों के समुदायों और बुनियादी ढाँचे के लिये खतरा उत्पन्न करता है।
 - प्रभावी शमन रणनीति विकसित करने के लिये ऐसे ग्लेशियरों की गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है।
 - जैसे-जैसे वैश्विक तापमान बढ़ रहा है, इस क्षेत्र में ग्लेशियरों की गति अप्रत्याशित होती जा रही है, जिसके लिये नरितर नगिरानी और अध्ययन की आवश्यकता है।